शेख़चिल्ली

(शेख़चिल्ली की प्रसिद्ध कहानियों पर आधारित रायगढ़ इप्टा के बाल कलाकारों द्वारा स्वयं रचा गया यह नाटक है। इसे 2003 की गर्मी की छुट्टियों में बतौर प्रयोग अजय आठले ने एक कार्यशाला में तैयार करवाया था। पिछली कड़ी में इस नाटक के तैयार होने की रचना-प्रक्रिया पर अजय का ही एक लेख साझा किया गया है। छह प्रदर्शनों के बाद इसका लिप्यन्तरण शेख़चिल्ली की भूमिका निभाने वाले बाल-कलाकार अजेश शुक्ला ने किया था। इसका प्रकाशन रायगढ़ इप्टा की वार्षिक पत्रिका 'रंगकर्म' के 2006 के अंक में किया गया था। इस नाट्यालेख का उपयोग कोई भी नाट्यदल स्थानीय और सामयिक परिस्थितियों के अनुसार इंप्रोवाइज़ कर, कर सकता है।)

(मंच पर अंधकार। तीसरी घंटी के बाद ताल पर नाचते हुए कोरस का दो पंक्तियों में प्रवेश। दोनों पंक्तियाँ मंच पर एक चक्कर लगाकर अर्द्ध चंद्राकार खड़ी हो जाती हैं और गीत गाती हैं।)

रे मामा रे मामा रे मामा रे मामा रे मामा रे मामा रे
सुन लो सुनाते हैं सबको कहानी चतुर चालाक शेख़चिल्ली की कहानी
रे मामा रे मामा रे मामा रे ...

काजी ने नौकरी की शर्त रखी भारी
छोड़ी जो नौकरी तो, जाएँगे कान और तनखा सारी
चिल्ली ने काजी की नौकरी स्वीकारी
लेकिन एक शर्त रखी
निकाला अगर नौकरी से तो,
काटूँगा कान और लूँगा तनखा सारी
चिल्ली ने काजी को इतना सताया
तंग आकर काजी ने चिल्ली को हटाया
तो आगे-आगे देखिए होता है क्या?

(रे मामा गाते हुए मंच से बाहर चले जाते हैं। शेख़चिल्ली बीच में रखी कुर्सी पर बैठकर कुछ सोचने लगता है। मंच पर तीन व्यक्तियों का भागते हुए प्रवेश। तीनों अत्यधिक डरे और सहमे हुए हैं, जैसे किसी से आतंकित हों। शेख़चिल्ली की नज़र उन पर पड़ती है, शेख़चिल्ली उन्हें पुकारता है।)

शेख़चिल्ली : (कुर्सी पर बैठे-बैठे ऊँची आवाज़ में) अरे भाई साहब, कहाँ जा रहे हैं आप लोग?

(वे नहीं सुनते, भागते रहते है। शेख़चिल्ली उठता है और फिर से पुकारता है।)

शेख़चिल्ली : अरे भाई साहब, कहाँ जा रहे हैं आप लोग? (वे फिर नहीं सुनते। शेख़चिल्ली उनका पीछा करता है, बार-बार पुकारता है, अंततः मंच के बीचोंबीच पत्थर की तरह बनकर बैठ जाता है। तीनों व्यक्ति दौड़ते हुए आते हैं और उससे टकराकर गिर जाते हैं। शेख़चिल्ली उठकर उन्हें पकड़ लेता है।)

शेख़चिल्ली : (बड़े मज़े से) हाँ ... पकड़ लिया। (अचानक तीनों के कान की ओर देखकर) अरे, तुम तीनों के कान कैसे कटे हुए हैं?

तीनों : (कराहते हुए) अरे मत पूछो भाई ...

शेख़चिल्ली : क्यों?

पहला : हम क़ाज़ी के यहाँ काम करते थे।

शेख़चिल्ली : अच्छा, तो?

दूसरा : उनकी काम की शर्त बड़ी कठिन है।

शेख़चिल्ली : अच्छा? क्या शर्त थी उनकी?

तीसरा : अपने मन से नौकरी छोड़ने पर वे कान काट लेते हैं।

शेख़चिल्ली : (आश्चर्य से) क्या? नौकरी छोड़ने पर कान काट लेते है! ऐसा करो, मुझे उस क़ाज़ी का पता बताओ।

पहला : तुम क्यों अपने कान कटवाना चाहते हो?

शेख़चिल्ली : मैं भी बेरोज़गार हूँ। मुझे भी नौकरी की तलाश है। बस, तुम लोग मुझे उस क़ाज़ी का पता बता दो।

तीनों : नहीं नहीं, तुम वहाँ मत जाओ।

शेख़चिल्ली : अरे बता भी दो।

पहला : आख़िर तुम अपना कान कटवाना क्यों चाहते हो?

शेख़चिल्ली : (निडरता से) अपने कान कटवाना नहीं, क़ाज़ी के कान काटना चाहता हूँ। बस, उनका पता बता दो।

पहला : अच्छा, ऐसी बात है! तुम ज़िद कर ही रहे हो तो बता देते हैं।

(तीनों उसे मंच की अलग-अलग दिशा की ओर ले जाकर बताते हैं।)

पहला : यहाँ से सीधे जाना ...

दूसरा : फिर दाएँ जाना और वहाँ से सीधे चले जाना ...

तीसरा : फिर बाएँ मुड़ना, वहाँ से सीधे चलकर दाएँ मुड़ना, फिर बाएँ ... वहीं एक बड़ी-सी हवेली मिलेगी, वही क़ाज़ी की हवेली है।

(तीनों का प्रस्थान। शेख़चिल्ली उनके निर्देशों को दोहराते हुए उनके बताए रास्ते पर चलता जाता है।)

शेख़चिल्ली : यहाँ से सीधे जाना ... फिर दाएँ जाकर सीधे चलना ... फिर बाएँ मुड़ना, वहाँ से सीधे चलकर दाएँ मुड़ना, फिर बाएँ ... वहीं एक बड़ी-सी हवेली मिलेगी ... (हवेली को देखकर चौंकता है) लगता है, यही है क़ाज़ी की हवेली। (आवाज़ लगाते हुए) क़ाज़ी साहब, ओ क़ाज़ी साहब!

(एक वृद्ध नौकरानी झाड़ू लगाते हुए आती है। टोकरी में कचरा भरती है और फेंकने जाती है)

नौकरानी : क़ाज़ी साहब के घर तो कोई नौकर टिकता ही नहीं, सारा काम मुझे ही करना पड़ता है। हूं ...

(शेख़चिल्ली हवेली के दरवाज़े के पास बैठा है। नौकरानी चिड़चिड़ाते हुए आती है और

कचरा दरवाज़े से बाहर फेंकती है। कचरा शेख़चिल्ली के सिर पर गिरता है।)

शेख़चिल्ली : (गुस्से से कपड़े झाड़ते हुए) अरे ... अरे, ये तुमने क्या किया?
नौकरानी : (चिड़चिड़ाकर) अरे निगोड़े, तू यहाँ क्या कर रहा है?
शेख़चिल्ली : मैं क़ाज़ी साहब से मिलने आया हूँ।
नौकरानी : तो पहले क्यों नहीं बताया? रुको, मैं अभी क़ाज़ी साहब को बुलाती हूँ। (भीतर जाते हुए) क़ाज़ी साहब, ओ क़ाज़ी साहब! आपसे कोई मिलने आया है।

(क़ाज़ी साहब का प्रवेश। आकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं। पुकारते हैं।)

क़ाज़ी : कौन है?
शेख़चिल्ली : (चेहरे पर चमक, दर्शकों से) लगता है, यही है क़ाज़ी ... (भीतर जाने का अभिनय) हुज़ूर! सलाम ...
क़ाज़ी : (शेख़चिल्ली की आवाज़ को नकारते हुए, धीमे स्वर में) सलाम
शेख़चिल्ली : (थोड़ा पास आकर ज़ोर से) हुज़ूर! सलाम ...
क़ाज़ी : (फिर से धीमे से) सलाम!
शेख़चिल्ली : (दर्शकों की ओर देखकर आँख मारता है, ज़ोर से चिल्लाता है) हुज़ूर! सलाम ...
क़ाज़ी : (हड़बड़ाकर नीचे गिरता है) अरे कौन है तू और क्या करने आया है?
शेख़चिल्ली : नौकरी की तलाश में आया था हुज़ूर।
क़ाज़ी : (मज़ा लेते हुए) अच्छा, तो तुम नौकरी की तलाश में आए हो”
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर।
क़ाज़ी : नाम क्या है तुम्हारा?
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर, बंदे को शेख़चिल्ली कहते हैं।
क़ाज़ी : शेख़चिल्ली! अच्छा क्या उम्र है तुम्हारी?
शेख़चिल्ली : उम्र! तेईस वर्ष, नौ महीने, सात दिन और पाँच घंटे।

(चौंककर क़ाज़ी गिर जाता है। दर्शकों से)

क़ाज़ी : जिस आदमी को अपनी उम्र के मामले में दिनों और घंटों का हिसाब मालूम है, वह आदमी कितना चालाक होगा! ख़ैर, (शेख़चिल्ली से) तो तुम नौकरी के वास्ते आए हो?
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर।
क़ाज़ी : तुम्हें हमारे यहाँ काम करने की शर्तें मालूम हैं?
शेख़चिल्ली : जी नहीं हुज़ूर।
क़ाज़ी : हम तुम्हें पचास रुपये महीना, रोटी और कपड़ा देंगे, पर हमारी ये एक शर्त है कि अगर तुम छह महीने के अंदर नौकरी छोड़कर भागते हो तो हम तुम्हारा कान काट लेंगे और तुम्हारी तनख़्वाह भी नहीं देंगे। कहो, मंज़ूर है?
शेख़चिल्ली : (कुछ सोचकर) जी हुज़ूर, मुझे मंज़ूर है, लेकिन मेरी भी एक शर्त है।
क़ाज़ी : (चौंककर) तुम्हारी शर्त? अच्छा कहो।
शेख़चिल्ली : हुज़ूर, अगर आपने छह महीने के अंदर मुझे निकाल दिया तो?
क़ाज़ी : नहीं नहीं, हम किसी को नौकरी से नहीं निकालते।

शेख़चिल्ली : फिर भी ... अगर आपने मुझे नौकरी से निकल दिया तो ...

क़ाज़ी : तो?

शेख़चिल्ली : तो मैं आपसे एक साल की तनख़्वाह लूँगा और साथ ही आपके कान काट लूँगा।

क़ाज़ी : (चौंककर) क्या कान भी काट लेगा? (दर्शकों से) बड़ा ख़तरनाक आदमी मालूम पड़ता है यार! मगर मुझसे ज़्यादा तो नहीं होगा। (शेख़चिल्ली से) ख़ैर मुझे मंज़ूर है।

शेख़चिल्ली : हुज़ूर अब इतना बता दीजिए कि मुझे क्या काम करना होगा?

क़ाज़ी : मेरे मुन्ने को सम्हालना, मेरा और मेरी बेगम का काम, घर और खेत का काम करना होगा। बस ...

शेख़चिल्ली : ठीक है हुज़ूर। मैं अभी से काम में लग जाता हूँ।

क़ाज़ी : ठीक है।

(सात-आठ साल के बच्चे का प्रवेश)

मुन्ना : अब्बा ... अब्बा ... अब्बा... (एकाएक मुन्ना की नज़र शेख़चिल्ली पर पड़ती है) वाह! नया नौकर! नए कपड़े! बढ़िया है! ऐ! चलो मेरा घोड़ा बनो।

(मुन्ना शेख़चिल्ली की पीठ पर बैठकर मंच का एक चक्कर लगाता है। बेगम का प्रवेश)

बेगम : (मुन्ने को डाँटते हुए) अरे बेटा, क्यों तंग कर रहे हो? बेचारा आज ही तो लगा है नौकरी में!

मुन्ना : तो अम्मी, आप मेरे साथ खेलो। चलो न!

बेगम : अरे रुक रुक, (शेख़चिल्ली से) चिल्ली, क़ाज़ी साहब के लिए नहाने का पानी गर्म कर देना।

शेख़चिल्ली : (चतुराई से) जी मालकिन! (जाता है। बेगम और मुन्ना भी खेलते हुए भीतर जाते हैं। शेख़चिल्ली भीतर से पुकारता है) हुज़ूर!

क़ाज़ी : क्या हुआ?

शेख़चिल्ली : आपके नहाने के लिए पानी गर्म कर दिया है।

क़ाज़ी : अच्छा आता हूँ।

(क़ाज़ी का प्रस्थान। शेख़चिल्ली झाड़न लेकर धूल झाड़ता है तभी क़ाज़ी नंगे बदन चिल्लाते हुए दौड़ते आता है)

क़ाज़ी : (कराहते हुए) अरे ... जल गया रे ... हाय हाय ...

बेगम : (दौड़कर आते हुए) अरे अरे, क्या हो गया?

क़ाज़ी : जल गया रे, जल्दी मेरे कपड़े लाओ।

बेगम : मुन्ना, जल्दी से कपड़े लेकर आ। (मुन्ना तौलिया और कपड़े लेकर आता है)

क़ाज़ी : (शरीर पोंछकर कपड़े पहनते हुए शेख़चिल्ली से) अरे कमबख़्त, पानी इतना गर्म करने के लिए तुझसे किसने कहा था, मैं तो जल ही गया!

शेख़चिल्ली : हुज़ूर, मालकिन ने तो मुझे पानी करने को कहा था। अब ये थोड़े ही बताया था कि कितना गर्म करना है!

क़ाज़ी : दफ़ा हो जा मेरी नज़रों से! (शेख़चिल्ली का प्रस्थान)

बेगम : अब कैसा लग रहा है जी?

क़ाज़ी : थोड़ी राहत है। मैं ज़रा दरबार से आता हूँ।

बेगम : जी, ठीक है। (क़ाज़ी का प्रस्थान। शेख़चिल्ली को आवाज़ देती है) अरे चिल्ली!

शेख़चिल्ली : जी मालकिन!

बेगम : तालाब के किनारे से एक टोकरी मिट्टी तो ले आना।

शेख़चिल्ली : जी मालकिन। (प्रस्थान)

बेगम : (मुन्ना से) बेटा, ज़रा भीतर से सब्ज़ी ला देना, बैठकर काट लूँ। (मुन्ना सब्ज़ी लाकर बेगम को देता है। तभी सीटी की आवाज़ सुनाई देती है। मुन्ना के दोस्त उसे छिपकर बुला रहे हैं)

मुन्ना : अम्मी अम्मी, खेलने जाऊँ?

बेगम : (डाँटते हुए) अभी नहीं।

मुन्ना : (फिर सीटी की आवाज़ सुनाई देती है) अम्मी अम्मी, जाने दो न!

बेगम : दिन भर खेलता तो रहता है, बैठ चुपचाप।

मुन्ना : (फिर से सीटी की आवाज़ सुनकर ज़िद करते हुए) नहीं, मैं तो जाऊँगा, मैं तो जाऊँगा ...

बेगम : (झल्लाकर) अच्छा जा।

(मुन्ना का प्रस्थान। बेगम मंच पर अकेली। शेख़चिल्ली का सिर पर टोकरी लिए प्रवेश)

शेख़चिल्ली : मालकिन, ये मिट्टी ले आया हूँ, कहाँ डालूँ?

बेगम : (चिड़चिड़ाकर) डाल दे मेरे सिर पर।

शेख़चिल्ली : (सचमुच में टोकरी की मिट्टी बेगम के सिर पर उँडेल देता है) लीजिए।

बेगम : अरे ... अरे... अरे, ये तूने क्या कर दिया? पूरे कपड़े गंदे कर दिए, सब्ज़ी बर्बाद कर दी।

शेख़चिल्ली : (बड़ी मासूमियत से) आपने ही तो कहा था मालकिन, कि डाल दे मेरे सिर पर।

बेगम : तो क्या सच में डाल देगा? अब आने दे क़ाज़ी साहब को, तेरी शिकायत करती हूँ।

(प्रस्थान। शेख़चिल्ली मिट्टी इकट्ठा करने का अभिनय करता है, क़ाज़ी का ठक्कर प्रवेश।)

क़ाज़ी : बेगम ... बेगम ...

(मुन्ना दौड़ते हुए प्रवेश करता है, पीछे-पीछे बेगम भी प्रवेश करती है।)

मुन्ना : अब्बा आ गए, अब्बा आ गए ... अब्बा अब्बा, आज न ... चिल्ली ने न ... अम्मी के ऊपर मिट्टी डाल दी।

क़ाज़ी : क्या!! अबे, ये तूने क्या किया?

शेख़चिल्ली : हुज़ूर हुज़र, इसमें मेरी कोई ग़लती नहीं है।

क़ाज़ी : तो किसकी गलती है?

शेख़चिल्ली : हुज़ूर, गलती तो मालकिन की है।

बेगम : मेरी गलती?

शेख़चिल्ली : (बेगम से) हाँ, आपकी गलती। (क़ाज़ी से) हुज़ूर, हुआ ये कि मालकिन ने तालाब के किनारे से एक टोकरी मिट्टी लाने को कहा था। (टोकरी सिर पर रखते हुए) तो मैं मिट्टी लेकर आया, मैंने पूछा - मालकिन, मिट्टी कहाँ डालूँ!

बेगम : (फिर से) डाल दे मेरे सिर पर! (शेख़चिल्ली फिर से मिट्टी बेगम के सिर पर डाल देता है।) अरे रे ... तूने फिर वही कर दिया!

शेख़चिल्ली : बस, ऐसा ही हुआ था हुज़ूर!

क़ाज़ी : ओ हो!

(शेख़चिल्ली, क़ाज़ी, बेगम और मुन्ना फ़्रीज़ हो जाते हैं। कोरस का गाते हुए प्रवेश।)

तंग करता है शेख़चिल्ली हमेशा क़ाज़ी को
शेख़चिल्ली की अनोखी है चाल
आगे देखिए चिल्ली करे क्या कमाल
वो तंग करता है ...
तंग करता है शेख़चिल्ली हमेशा क़ाज़ी को ...

(गाते हुए कोरस के साथ सबका प्रस्थान। क़ाज़ी आता है।)

क़ाज़ी : चिल्ली!

शेख़चिल्ली : (आते हुए) जी हुज़ूर!

क़ाज़ी : आज तुझे खेत जाना है और दस बीघा ज़मीन जोतना है।

शेख़चिल्ली : (कुछ सोचकर) जी हुज़ूर!

क़ाज़ी : (आश्चर्य से) जी हुज़ूर! अच्छा, ईंधन के लिए लकड़ी भी लानी है।

शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!

क़ाज़ी : (आश्चर्य से) फिर जी हुज़ूर! हाँ, और तेरे को शिकार भी लेकर आना है।

शेख़चिल्ली : (पुनः कुछ सोचकर) जी हुज़ूर!

क़ाज़ी : फिर जी हुज़ूर! अच्छा जा।

शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर! (प्रस्थान। क़ाज़ी ज़ोर से ठहाका लगाकर हँसता है।)

बेगम : (प्रवेश करते हुए) इतना क्यों हँस रहे हैं?

क़ाज़ी : (हँसी रोकते हुए) पता है, आज मैंने चिल्ली को दस बीघा ज़मीन जोतने के लिए कहा है, तो कहता है - जी हुज़ूर! (हँसते हुए) अरे इतना काम तो वह कर ही नहीं सकता।

बेगम : जी हाँ, इतना काम तो वह कर ही नहीं सकता।

क़ाज़ी : (हँसते हुए) हा हा हा! (अचानक हँसी रोककर) अगर वह शाम तक वापस आ गया तो?

बेगम : वह वापस आ ही नहीं सकता।

क़ाज़ी : अरे, शेख़चिल्ली बहुत चालाक है। अगर वह शाम तक आ गया तो उसे खाने के लिए एक रोटी देना और कहना कि वह रोटी इस तरह से खाए कि रोटी साबुत भी बची रहे और उसका पेट भी भर जाए। उसके बाद उसको बंद मटके में घी देना और कहना कि मटके का ढक्कन खोले बिना ही सारा घी पी जाए। ये दोनों काम तो वह हरगिज़ नहीं कर पाएगा।

बेगम : जी हाँ, ये काम तो वह कर भी नहीं सकता।

क़ाज़ी : मैं थोड़ा कचहरी की तरफ़ से आता हूँ।

(क़ाज़ी का प्रस्थान। बेगम मुस्कुराते हुए कुर्सी पर बैठ जाती है।)

बेगम : अब आएगा मज़ा ...

(शेख़चिल्ली कंधे पर मरी हुई कुतिया और लकड़ी का गठ्ठर लेकर आता है। दूर से चिल्लाता है।)

शेख़चिल्ली : मालकिन ... ओ मालकिन ...

बेगम : (चेहरे की चमक बुझ जाती है, चौंककर) अरे, तू इतनी जल्दी आ गया!

शेख़चिल्ली : हाँ मालकिन। (लकड़ियों का गठ्ठर पटककर) ये लीजिए मालकिन, ईंधन के लिए लकड़ियाँ।

बेगम : (लकड़ियों को ध्यान से देखकर) तू तो हमारा हल तोड़कर ले आया?

शेख़चिल्ली : (मज़ा लेते हुए) अब लकड़ियाँ ही तो लाना था मालकिन, खेत कोई जंगल थोड़ी न है, आजू-बाजू कुछ दिखा नहीं, तो मैंने सोचा, क्यों न इस हल को तोड़कर ले जाया जाए!

बेगम : (गुस्से से) तो तुझे हल तोड़कर लाने के लिए तो नहीं कहा गया था।

शेख़चिल्ली : (कंधे पर रखी मरी हुई कुतिया को नीचे रखकर) और मालकिन, यह रहा शिकार ...

बेगम : (देखकर रोते हुए) अरे, तूने तो हमारी प्यारी कुतिया को ही मार डाला रे ...

शेख़चिल्ली : अब शिकार ही तो लाना था मालकिन, खेत कोई जंगल थोड़ी न है, आजू-बाजू कुछ दिखा नहीं, तो मैंने सोचा, क्यों न इस कुतिया को ही मार लिया जाए!

बेगम : बस, अब मैं समझ चुकी हूँ कि तू खेत भी क्या जोतकर आया होगा! चल ये सारा कचरा उठाकर बाहर फेंक आ।

(शेख़चिल्ली लकड़ी और मरी हुई कुतिया को बाहर फेंककर आता है।)

शेख़चिल्ली : (पेट पर हाथ फेरते हुए) मालकिन, बड़ी ज़ोर से भूख लगी है, रोटियाँ तो दो।

(बेगम थाली में रोटी और अचार लाकर शेख़चिल्ली के सामने रख देती है। शेख़चिल्ली जैसे ही रोटी उठाता है, बेगम उसे रोक देती है।)

बेगम : रुक, क़ाज़ी साहब ने कहा है कि रोटी इस तरह ख़ाना कि रोटी साबुत भी बची रहे और तेरा पेट भी भर जाए।

(शेख़चिल्ली थोड़ी चिंता में पड़ जाता है। अचानक उसके दिमाग़ में एक तरकीब आती है। वह रोटी को मोड़ता है और बाजू की परिधि छोड़कर बाक़ी खा लेता है।)

शेख़चिल्ली : (रोटी के बीचोंबीच हुए छेद में से बेगम को देखकर) ये देखिए मालकिन, रोटी साबुत भी बच गई और मेरा पेट भी भर गया।

बेगम : रुक जा। (अंदर से एक घी से भरा घड़ा लाती है, जिसका मुँह बंद है, उसे देकर) ये ले इसे पी जा। (शेख़चिल्ली जैसे ही पीने के लिए घड़े का मुँह खोलना चाहता है, बेगम रोक देती है) रुक रुक, क़ाज़ी साहब ने कहा है कि घी के घड़े का ढक्कन खोले बिना ही तुझे सारा घी पीना है। अब देखती हूँ कि ये तू कैसे कर पाता है!

(शेख़चिल्ली पहले चिंता में पड़ जाता है फिर उसे तरकीब सूझती है। वह नुकीली कील से घड़े के नीचे छेद करता है और सारा घी पी जाता है।)

शेख़चिल्ली : मालकिन, और रोटियाँ हैं क्या?

बेगम : सारी रोटी तो खा गया। घर में आटा भी ख़त्म हो गया है और पैसे भी नहीं हैं। जा, और क़ाज़ी साहब से पैसे लेकर आ।

शेख़चिल्ली : जी मालकिन!

(दोनों अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं। कोरस का गाते हुए प्रवेश।)

चिल्ली चले दरबार, क़ाज़ी साहब के
लौंगा इलाइची का बीड़ा दबा के
चिल्ली चले दरबार, क़ाज़ी साहब के

(गाना ख़त्म होते-होते मंच पर दरबार का दृश्य। मंच के मध्य में क़ाज़ी साहब की कुर्सी। अग़ल-बग़ल दो आदमी खड़े हैं। मंच पर एक ओर दो पहरेदार खड़े हैं, दूसरी ओर गाँव के कुछ लोग बैठे हैं। क़ाज़ी साहब आकर कुर्सी पर बैठते हैं।)

क़ाज़ी : आज की कार्यवाही शुरू की जाए।

पहरेदार एक : फ़रियादी हाज़िर हो ...

(फ़रियादी का प्रवेश)

फ़रियादी : हुज़ूर सलाम!

क़ाज़ी : सलाम सलाम, कहो क्या दरख़ास्त है?

फ़रियादी : हुज़ूर, क्या है कि सलीम ने पिछले तीन सालों से मेरे खेत पर क़ब्ज़ा जमा लिया है। उसमें वह न हमें खेती करने देता है और न ही फसल का आधा हिस्सा देता है।

क़ाज़ी : अच्छा, कोई गवाह है तुम्हारे पास?

फ़रियादी : जी हुज़ूर।

क़ाज़ी : तो पेश किया जाए।

(फ़रियादी मंच से बाहर जाता है। शेख़चिल्ली का गाते हुए प्रवेश।)

शेख़चिल्ली : (गाते हुए) चिल्ली चले दरबार, क़ाज़ी साहब के ... (जैसे ही दरबार में घुसने की कोशिश करता है, पहरेदार रोक लेते हैं) मुझे अंदर जाने दो भाई।

पहरेदार : तुम अंदर नहीं जा सकते।

शेख़चिल्ली : अरे, मैं क़ाज़ी साहब का नौकर हूँ, प्राइवेट सेक्रेटरी!

पहरेदार : तुम कोई भी हो, तुम अंदर नहीं जा सकते।

शेख़चिल्ली : अब देखता हूँ, कैसे अंदर नहीं जाने देते! (बाहर से ही ज़ोर से चिल्लाते हुए) हुज़ूर हुज़ूर, घर में आटा ख़त्म हो गया है, सब्ज़ी ख़त्म हो गई है और घर में पैसे नहीं हैं। मालकिन ने कहा है कि दरबार जाकर क़ाज़ी साहब से पैसे लेकर आना।

(दरबार में क़ाज़ी के अलावा सभी ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते हैं।)

क़ाज़ी : (गुस्से से) ख़ामोश! (सब चुप हो जाते हैं) आज की कार्रवाई रद्द की जाती है।

(सभी का 'चिल्ली ने किया कमाल, क़ाज़ी के दरबार में ...' गाना गाते हुए प्रस्थान।)

(क़ाज़ी के घर का दृश्य)

क़ाज़ी : (गुस्से से पुकारते हुए प्रवेश करता है) बेगम बेगम!
बेगम : क्या हुआ? इतना क्यों चिल्ला रहे हो?
क़ाज़ी : आज तुमने चिल्ली को दरबार में क्यों भेजा? नाक ही कटा दी कमीने ने!
बेगम : तो क्या करती? आटा ख़त्म हो गया था, दाल ...
क़ाज़ी : तो क्या और कोई नौकर नहीं था?
बेगम : नौकर! इस घर में नौकर टिकते ही कहाँ हैं! (अंदर से एक चिट्ठी लाकर देती है) लीजिए, आपका ख़त आया है।
क़ाज़ी : (पढ़कर) साले साहब का है, हमें ससुराल जाना पड़ेगा, उन्होंने बुलाया है।
बेगम : जाएँगे तो साथ में उस चिल्ली को भी ले जाइएगा। मैं नहीं रह सकती उसके साथ।
क़ाज़ी : उसे भी ले जाना पड़ेगा?
बेगम : जी हाँ। (बेगम का प्रस्थान)
क़ाज़ी : चिल्ली, ए चिल्ली!
शेख़चिल्ली : (आते हुए) जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : हमको ससुराल से बुलावा आया है।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : ससुराल जाना है।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : तुम भी चल रहे हो हमारे साथ।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : वहाँ कोई शैतानी मत करना।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : हमारी इज़्ज़त का सवाल है।
शेख़चिल्ली : जी हुज़र!
क़ाज़ी : ये जी हुज़ूर, जी हुज़ूर क्या लगा रखा है। जाओ और हमारा घोड़ा तैयार करो।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर! (दोनों का प्रस्थान। शेख़चिल्ली भीतर जाकर घोड़ा लेकर आता है) हुज़ूर, आपका घोड़ा तैयार है।
क़ाज़ी : (आते हुए) चलो। (क़ाज़ी घोड़े पर बैठकर मंच का एक चक्कर लगाते हैं)

(गाना)

चिल्ली चले ससुराल काजी साहब के ...

क़ाज़ी : अरे, रुको रुको ...
शेख़चिल्ली : (घोड़े को रोककर) जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : देखो, हम थोड़ा जंगल की ओर से आ रहे हैं।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!

क़ाज़ी : तुम घोड़े को लेकर यहीं रुको।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : ये जी हुज़ूर, जी हुज़ूर क्या लगा रखा है? घोड़े को ठीक से देखते रहना।

(क़ाज़ी मंच से बाहर चला जाता है। दो व्यक्तियों का प्रवेश)

व्यक्ति एक : यार, जल्दी-जल्दी चलो।
व्यक्ति दो : चल तो रहा हूँ।
शेख़चिल्ली : (उन्हें पुकारकर) अरे भाई साहब!
दोनों : (पास आकर) क्या बात है?
शेख़चिल्ली : आप लोग कहाँ जा रहे हैं?
व्यक्ति एक : पास के गाँव में घोड़ा ख़रीदने जा रहे हैं।
शेख़चिल्ली : क्या आप घोड़ा ख़रीदने जा रहे हैं?
दोनों : हाँ।
शेख़चिल्ली : (क़ाज़ी के घोड़े की ओर इशारा कर) यह घोड़ा कैसा है?
दोनों : (घोड़े को परखकर) घोड़ा तो अच्छा है। क्यों, कितना लोगे इसका?
शेख़चिल्ली : नौ सौ रुपये।
व्यक्ति एक : नौ सौ तो बहुत ज़्यादा हैं, सात सौ में दे दो।
शेख़चिल्ली : आठ सौ से एक पैसा कम नहीं लूँगा।
व्यक्ति दो : अरे, सात सौ में देना हो तो दो, नहीं तो हम चले। (अपने साथी से) चल यार चल!
शेख़चिल्ली : अरे भाई साहब, रुकिए! लीजिए, सात सौ में घोड़ा आपका। आप भी क्या याद रखोगे!
दोनों : ठीक है। (पैसे देते हैं)
शेख़चिल्ली : एक मिनट रुकिए।
व्यक्ति एक : अब क्या है?
शेख़चिल्ली : निशानी के लिए इसकी पूँछ काट लेता हूँ, बड़ा प्यारा घोड़ा है न!
दोनों : ठीक है।

(शेख़चिल्ली जेब से कैंची निकालकर घोड़े की पूँछ काट लेता है और उनके जाने के बाद एक बिल में पूँछ डाल देता है।)

शेख़चिल्ली : (ज़ोर से चिल्लाते हुए) हु ...ज़ू...र, हु ...ज़ू...र !
क़ाज़ी : (आते हुए) अबे क्या हुआ?
शेख़चिल्ली : हुज़ूर, आपके घोड़े को चूहों के झुण्ड ने अपने बिल में खींच लिया है। देखिए हुज़ूर, बड़ी मुश्किल से उसकी पूँछ पकड़ पाया हूँ हुज़ूर!
क़ाज़ी : अबे, घोड़े को चूहे कभी अपने बिल में घुसा सकते हैं क्या?
शेख़चिल्ली : अब आप देख तो रहे हैं हुज़ूर! आइए, आप भी खींचिए। दोनों मिलकर घोड़े को बाहर निकाल लेते हैं।

(दोनों पूँछ पकड़कर खींचते हैं। पूँछ उखड़ जाती है। दोनों ज़ोर से पीछे की ओर गिरते हैं)

शेख़चिल्ली : (उखड़ी पूँछ को देखकर) गया ... गया ..., अरे, आपको इतने ज़ोर से खींचने की क्या

ज़रूरत थी? पूरी पूँछ ही उखड़ गई!

क़ाज़ी : अबे, तू मुझे बेवक़ूफ बनाता है?

शेख़चिल्ली : आप देख तो रहे हैं हुज़ूर!

क़ाज़ी : मैं तुझे नौकरी से निकाल दूँगा।

शेख़चिल्ली : एक महीने की तनख़्वाह और कान!

क़ाज़ी : अरे, अब ससुराल कैसे जाएँगे?

शेख़चिल्ली : हुज़ूर, पास के गाँव में घोड़ों का एक मेला लगा है। ऐसा करते हैं, वहीं से एक घोड़ा ख़रीद लेते हैं। वैसे भी आप एक क़ाज़ी हैं, क्या एक मामूली घोड़ा नहीं ख़रीद सकते?

क़ाज़ी : ठीक है। चलो।

(मंच का एक चक्कर लगाकर दोनों घोड़ों के बाज़ार में आते हैं। वहाँ घोड़ों के व्यापारी ज़ोर-ज़ोर से बोली लगा रहे हैं।)

व्यापारी एक : ए घोड़ेवाला, ए घोड़ों का मेला, लो बड़े-बड़े घोड़े, लो प्यारे-प्यारे घोड़े ...

ग्राहक एक : ये घोड़ा कैसा है?

व्यापारी एक : अरे भाई साहब, यह जो घोड़ा है, इसके बाप का जो बाप का जो बाप था, वह महाराणा प्रताप का घोड़ा था। कहो तो पैक कर दूँ...?

ग्राहक एक : अरे रहने दो।

ग्राहक दो : यह घोड़ी?

व्यापारी एक : भाई, यह जो घोड़ी है न, इसकी माँ की माँ की माँ थी न, वह महारानी लक्ष्मीबाई की घोड़ी थी। चाहे तो पैक कर दूँ?

ग्राहक दो : छोड़ो भी।

ग्राहक तीन : यह घोड़ी?

व्यापारी एक : अरे भाई साहब, इस घोड़ी की बेटी की बेटी ... है न, नवीन जिंदल की घोड़ी है। बोलो तो पैक कर दूँ?

ग्राहक तीन : रहने दो।

(व्यापारी अपने घोड़े लेकर मंच का एक चक्कर लगाकर दूसरी जगह पर खड़ा हो जाता है। क़ाज़ी और शेख़चिल्ली का प्रवेश)

शेख़चिल्ली : आइये हुज़ूर, आइये! देखिए हुज़ूर, बड़े-बड़े घोड़े, प्यारे-प्यारे घोड़े।

क़ाज़ी : अरे, वो सब तो ठीक है। जल्दी करो, हमें ससुराल पहुँचना है।

शेख़चिल्ली : (व्यापारी से) ए भाई, तुम्हारे पास कोई स्पेशल वाला घोड़ा नहीं है क्या?

व्यापारी एक : है न हुज़ूर!

शेख़चिल्ली : तो खड़े क्या हो, जल्दी लेकर आओ।

व्यापारी एक : (भीतर से एक नया घोड़ा लेकर आता है) यह लीजिए हुज़ूर।

शेख़चिल्ली : हाँ, ये है दमदार घोड़ा, कहो कितना लोगे?

व्यापारी एक : नौ सौ रुपये।

शेख़चिल्ली : नौ सौ तो बहुत ज़्यादा बोल रहे हो!

व्यापारी एक : देखो साब, धंधा-पानी में टेंशन नहीं लेने का ...

क़ाज़ी : (टोकते हुए) अरे, जल्दी ले लो यार, ससुराल पहुँचना है।

(शेख़चिल्ली क़ाज़ी से पैसे लेकर व्यापारी को देता है। व्यापारी शेष घोड़े लेकर मंच से प्रस्थान करता है। क़ाज़ी घोड़े पर बैठता है। मंच का एक चक्कर लगाता है, एक सराय के सामने पहुँचकर)

क़ाज़ी : अरे, रुको रुको! (शेख़चिल्ली घोड़े को रोकता है) देखो रात बहुत हो गई है ...
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : अब रात को हम इसी सराय में आराम करेंगे।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : देखो, तुम रात भर घोड़े की जमकर मालिश करना।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : हम सोने जा रहे हैं।
शेख़चिल्ली : जी हुज़ूर!
क़ाज़ी : ये जी हुज़ूर, जी हुज़ूर क्या लगा रक्खा है? हम जा रहे हैं ... इसकी खूब जमकर मालिश करना।

(क़ाज़ी का प्रस्थान। शेख़चिल्ली घोड़े को लेकर पुनः उसी व्यापारी के पास पहुँचता है। व्यापारी सोया हुआ है।)

शेख़चिल्ली : (उसे जगाते हुए) अरे भाई साहब! उठिये!
व्यापारी एक : क्या हुआ?
शेख़चिल्ली : मैं ये घोड़ा वापस करने आया हूँ।
व्यापारी एक : क्यों?
शेख़चिल्ली : क़ाज़ी साहब को पसंद नहीं आया। कहते हैं, बड़ा उछलता है!
व्यापारी एक : बिका हुआ माल वापस नहीं होता।
शेख़चिल्ली : अरे, 100-200 रुपये काटकर बाक़ी पैसे वापस कर देना। वैसे भी एक घंटा ही तो हुआ है इस घोड़े को लेकर। एक घंटे में घोड़ा कोई घिस थोड़े ही गया होगा!
व्यापारी एक : ठीक है, 200 रुपये काटकर सात सौ वापस करूँगा, कहो चलेगा?
शेख़चिल्ली : दौड़ेगा, दौड़ेगा ... (व्यापारी पैसे देता है) अब एक ख़रगोश ख़रीदकर लाता हूँ। (मंच पर एक चक्कर लगाकर आवाज़ लगाता है) अरे कोई है?
व्यापारी दो : जी हुज़ूर, सलाम वालेकुम!
शेख़चिल्ली : वालेकुम अस्सलाम। जनाब, आपके पास कोई ख़रगोश मिलेगा क्या?
व्यापारी दो : जी भाई साहब, मिलेगा।
शेख़चिल्ली : कितने वाला है?
व्यापारी दो : जी, 100 वाला है, 200 वाला है ...
शेख़चिल्ली : अच्छा अच्छा, सौ वाला दे दीजिए ...
व्यापारी दो : (भीतर से ख़रगोश लेकर आता है) लीजिए हुज़ूर!
शेख़चिल्ली : (पैसे देता है) शुक्रिया।

(शेख़चिल्ली ख़रगोश को लेकर पुनः सराय के पास आता है। ख़रगोश की मालिश करने लगता है। सुबह होती है। क़ाज़ी का प्रवेश।)

क़ाज़ी : अरे, यह ख़रगोश कहाँ से आ गया?
शेख़चिल्ली : हुज़ूर, ये आपका घोड़ा है ...
क़ाज़ी : अबे, ये मेरा घोड़ा नहीं, ख़रगोश है। सीधी तरह से बता, मेरा घोड़ा कहाँ गया?
शेख़चिल्ली : हुज़ूर, ये आपका घोड़ा ही है। देखिए, मैंने रात भर इसकी इतनी मालिश की, इतनी मालिश की कि ये घिस-घिसकर इतना-सा हो गया। ये देखिए हुज़ूर, इसके कान, इसके कानों की मालिश नहीं की, इसलिए ये वैसे के वैसे हैं। ज़रा ग़ौर से देखिए हुज़ूर, लगता है न आपका घोड़ा?
क़ाज़ी : (ख़रगोश को छीनकर फेंकते हुए) अबे, मैं तुझे नौकरी से निकल दूँगा।
शेख़चिल्ली : एक साल की तनख़्वाह और कान!
क़ाज़ी : (परेशान होकर) अबे, अब हम ससुराल कैसे जाएँगे?
शेख़चिल्ली : अब तो थोड़ी ही दूरी बची है हुज़ूर, इसलिए पैदल ही चलते हैं।
क़ाज़ी : (चिढ़ते हुए) चलो।

(शेख़चिल्ली और क़ाज़ी मंच के दो चक्कर लगाते हैं। पार्श्व से गीत सुनाई देता है)

'चिल्ली चले ससुराल, क़ाज़ी साहब के ...'

शेख़चिल्ली : एक मिनट हुज़ूर, आप यहीं रुकिए, मैं आपके साले साहब को बुला लेता हूँ। (दरवाज़ा खटखटाने का माइम) अरे कोई है? अरे कोई है?
साला : (बाहर निकलते हुए) क्या हुआ? कौन है?
शेख़चिल्ली : क्या हुआ? अरे आप लोग अंदर आराम से बैठे हैं और वहाँ क़ाज़ी साहब बाहर धूप में खड़े हैं!
साला : अरे! जीजाजी!!
शेख़चिल्ली : जाइए, जाइए, उन्हें लेकर आइए।
साला : (क़ाज़ी के पास जाकर) अरे जीजाजी! ये क्या हालत बना रखी है?
क़ाज़ी : अरे, यूँ ही ...
साला : चलिए, भीतर चलिए।

(दोनों का प्रस्थान। दूसरी ओर से क़ाज़ी की सास का प्रवेश)

शेख़चिल्ली : सलाम माँ जी! माँ जी, क़ाज़ी साहब की तबियत थोड़ी ख़राब चल रही है। ऐसा कीजिएगा कि उनको सिर्फ़ मूँग की दाल ही दीजिएगा, ऐसा मुझे मालकिन साहिबा ने बतलाया है।
सास : अच्छा हुआ तुमने बता दिया। तुम्हारी तबियत तो ठीक है?
शेख़चिल्ली : जी, मैं तो बिलकुल फिट हूँ। आई एम फिट। मुझे तो सब कुछ चलेगा।
सास : तो ठीक है।

(सास का प्रस्थान। एक नौकर ख़ाना लेकर आता है, शेख़चिल्ली मज़े से ख़ाना खाकर वहीं सो जाता है। क़ाज़ी का प्रवेश।)

क़ाज़ी : (पेट पकड़कर शेख़चिल्ली को उठाते हुए) अबे चिल्ली उठ।

शेख़चिल्ली : अरे हुज़ूर, सोने दीजिए।

क़ाज़ी : अबे उठ।

शेख़चिल्ली : क्या हुआ हुज़ूर?

क़ाज़ी : अबे चल, मुझे जंगल की तरफ़ जाना है।

शेख़चिल्ली : हुज़ूर, रात को जंगल में जंगली जानवरों का डर होता है। आपका पेट ख़राब है न, तो ऐसा कीजिए कि वहाँ जो हांडी रखी है न, जाकर उसी में निपट लीजिए।

क़ाज़ी : अबे मैं तुझे नौकरी से निकाल दूँगा।

शेख़चिल्ली : एक साल की तनख़्वाह और कान!

क़ाज़ी : चिल्ली!

शेख़चिल्ली : वैसे हुज़ूर, सबेरे ही फेंक देंगे न!

क़ाज़ी : फेंक देगा न?

शेख़चिल्ली : मैं फेंक दूँगा न हुज़ूर!

क़ाज़ी : तो ठीक है। (क़ाज़ी मटके में निपट लेता है। सुबह आकर शेख़चिल्ली की जगत है) चिल्ली, अबे चिल्ली उठ। सुबह हो रही है। जाकर मटका फेंक आ।

शेख़चिल्ली : मटका? कौनसा मटका?

क़ाज़ी : अबे, तू ये कैसी बातें कर रहा है! जा, मटका फेंक आ।

शेख़चिल्ली : अच्छा! वह मटका! नहीं नहीं हुज़ूर, मैं ये नहीं कर सकता।

क़ाज़ी : अबे, तू ने ही तो कहा था कि सबेरा होते ही फेंक दूँगा।

शेख़चिल्ली : वो तो नींद में बोल दिया होगा हुज़ूर।

क़ाज़ी : (डाँटकर) अबे जा, जाकर मटका फेंक।

शेख़चिल्ली : नहीं हुज़ूर, हम आपके नौकर हैं - प्राइवेट सेक्रेटरी, कोई सफ़ाई कामगार नहीं। ये काम हम नहीं कर सकते।

क़ाज़ी : मैं तुझे नौकरी से निकल दूँगा।

शेख़चिल्ली : एक साल की तनख़्वाह और कान!

क़ाज़ी : अरे या ... र ... (मनाते हुए) जा यार, जाकर फेंक दे।

शेख़चिल्ली : नहीं हुज़ूर, हम आपके नौकर हैं, सफ़ाई कर्मचारी नहीं।

क़ाज़ी : अरे जा यार ...

शेख़चिल्ली : नहीं हुज़ूर।

क़ाज़ी : (परेशान होकर) अब मुझे ही कुछ करना होगा।

(क़ाज़ी मटके को एक चादर से ढाँककर उठाता है। मंच का एक चक्कर लगता है। तभी साले का प्रवेश।)

साला : अरे जीजाजी, कहाँ जा रहे हैं?

क़ाज़ी : (घबरा जाता है) कहीं नहीं यार, तुम जाओ, मैं अभी थोड़ी देर में आ जाऊँगा।

साला : जीजाजी, आपके हाथ में क्या है? (चादर हटाकर देखता है) अरे मटका?

क़ाज़ी : (उसे पड़े धकेलते हुए) अरे कुछ नहीं है। तुम जाओ।

साला : (अपने से) लगता है, जीजाजी घर से कुछ माल-पानी लेकर जा रहे हैं। (ज़ोर से) अरे जीजाजी रुकिए तो ... (क़ाज़ी दौड़ने लगता है। साला उसका पीछा करता है। वे मंच का

एक चक्कर लगाते हैं।अंततः साला जीजा को पकड़ लेता है) अरे भागते कहाँ हैं? दिखाइए तो, उस मटके में क्या है!

क़ाज़ी : अरे छोड़ो, तुम जाओ तो।

साला : दिखाइए दिखाइए ... (साला छीना-झपटी कर अंततः मटका छीन लेता है। देखते ही नाक-भौं सिकोड़कर मटका दूर फेंक देता है। नाक दबाकर हैरानी से) जीजाजी, ये सब क्या है?

क़ाज़ी : अरे कुछ नहीं यार, मैं तुमको बताता हूँ। ये जो मेरा नौकर है न चिल्ली ... (बताने का माइम करता है। ढोलक की आवाज़ तेज होकर बंद हो जाती है) मैं इससे तंग आ गया हूँ। इससे छुटकारा पाने का कुछ उपाय तो बताओ।

साला : आइए। (एक कोने में ले जाता है। फिर ढोलक बजने लगती है। साले का समझाने का माइम)

क़ाज़ी : हाँ, ये ठीक रहेगा।

(दोनों का साथ-साथ प्रस्थान। दृश्य परिवर्तन। क़ाज़ी के घर का दृश्य)

क़ाज़ी : बेगम, बेगम ...

बेगम : आप आ गए!

क़ाज़ी : हाँ, तुम्हारे भाई ने चिल्ली से छुटकारा पाने का बढ़िया उपाय बताया है।

बेगम : क्या?

क़ाज़ी : मुन्ने को तुम अपनी माँ के यहाँ छोड़ दो। हम लोग दो-तीन हफ़्ते के लिए कहीं बाहर चलते हैं। घर में कोई नहीं रहेगा तो चिल्ली, ख़ुद-ब-ख़ुद घर छोड़कर चला जाएगा।

बेगम : हाँ, यह ठीक रहेगा। ऐसा करते हैं कि हम लोग कुछ दिनों के लिए लखनऊ चलते हैं।

क़ाज़ी : (खुश होकर) बहुत अच्छे! जाओ, अब तुम जाकर पैकिंग कर लो।

(दोनों का प्रस्थान। शेख़चिल्ली छिपकर बातें सुन रहा है। बेगम ख़ुशी-ख़ुशी एक पेटी में सामान रखने का माइम करती है। क़ाज़ी को पुकारती हुई विंग तक जाती है, तब तक शेख़चिल्ली आकर पेटी खोलकर उसमें बैठ जाता है।)

बेगम : अजी सुनते हो! सब सामान पैक हो गया। चलो।

क़ाज़ी : (आकर, पेटी उठाते हुए) अरे, यह इतनी भारी क्यों है?

बेगम : अरे पंद्रह दिनों का खाने-पीने का सामान है, कपड़े-लत्ते हैं, भारी नहीं होगी तो क्या होगी?

क़ाज़ी : अरे, मुझसे तो उठाई ही नहीं जा रही है।

बेगम : धीरे-धीरे चलिए, बस स्टैंड नज़दीक ही तो है।

क़ाज़ी : मुझसे नहीं उठाया जा रहा है ... मैं गिर जाऊँगा ... अरे, किसी को बुलाओ ...

बेगम : (पुकारते हुए) अरे भाई साहब ... सुनिए ... मदद कीजिए ... ज़रा रुकिए ...

(चारों तरफ़ से लोग आते हैं। पेटी नीचे उतारने में मदद करते हैं)

क़ाज़ी : अरे, इसमें ऐसा क्या डाल दिया? इतना वज़न तो नहीं होना चाहिए था।

बेगम : खोलकर देख लीजिए न!

(क़ाज़ी के पेटी खोलते ही शेख़चिल्ली हँसते हुए बाहर निकलता है। क़ाज़ी और बेगम डर जाते हैं)

दोनों : भ ... भ ... भू ... भूत ...

शेख़चिल्ली : हुज़ूर सलाम, मालकिन सलाम! कहाँ जा रहे हैं हुज़ूर? लखनऊ? वह भी अकेले अकेले? हम भी चलें क्या?

क़ाज़ी : (परेशान होकर) अरे यार, तू मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ देता?

शेख़चिल्ली : एक साल की तनख़्वाह और कान!

क़ाज़ी : तू दो साल की तनख़्वाह ले ले पर मेरा पीछा छोड़ दे।

शेख़चिल्ली : एक शर्त पर।

क़ाज़ी : वो क्या?

शेख़चिल्ली : आज के बाद किसी गरीब के कान नहीं काटोगे?

क़ाज़ी : नहीं काटूँगा।

शेख़चिल्ली : और किसी को सताओगे भी नहीं?

क़ाज़ी : नहीं सताऊँगा।

शेख़चिल्ली : लाओ मेरी तनख़्वाह।

क़ाज़ी : (पोटली देते हुए) ये लो।

(शेख़चिल्ली पोटली को गर्व और प्यार से देखता है सभी कलाकारों का मंच पर प्रवेश। सभी गाते हैं।)

रे मामा रे मामा रे मामा रे, रे मामा रे मामा रे मामा रे
सुन ली, सुनाई है हमने कहानी, चतुर चालाक शेख़चिल्ली की कहानी
रे मामा रे मामा रे मामा रे ...

(गाते हुए अर्धचन्द्राकार बनाते हुए सब एक साथ झुककर दर्शकों का अभिवादन करते हैं)

*****